

जेजहिमकलुनिमदवी तागयुथसुसा रुनी दिव्यवसुधनी धोना सिंहयमासनमिता ॥
 कीरीठिकुलताकारे केयूनामलिनूयना नलमाता त्रिवेगति हात्रा रुवरी हृषिता ॥ मरु
 ऊवायुधैखमै मरुलमलिकेतथा दधनरुतकेयूव कठिप्रवेयति तथा ॥ तिनकि
 यमिरुंदाया दितत्वयंत्रियात्रही तिलाक नूयिनीदेवी विश्ववायीनमा मुति ॥ तंजीय
 मां आनन्दगकिरेत्रवानन्दमहाविद्याना केधेरीझूँ जयवागधेरीयाइकांयूऊयामि
 वूँ जेजहंतेवागीधेनायसेंतेवागीधेरीगदितायवूँ नमः ॥ जेजहंतेवागनन्दगकिरेत्र

आनन्दगकिरेत्र

1880

1

[illegible]

(संज्ञावचक ॥ हृ ९ हं उ व नेखा न ॥ सुष्ठि वचक ॥ विन्दु वि को ल व सू को ल ॥ क्लिति वचक ॥
 व्यर्थ वा ह के मे ले के लो के लु व ना ल के वि को र्ण व सू को ल अ वेन्द वा न दृ ल व की ॥ वहि
 दृ ल व मा लि ख्य वि धा सर्वा वहि ४ यू न ४ ॥ वि को ल अ समा लि ख्य क्लिति वचक ह वं न्ये यं ॥
 (विन्दु वि को ल मा लि ख्य व सू को ल अ दि ग्य र्ग ॥ ग्लु को र्ण व ह दार् ने ए ल व नेखा व हू यू र्ण ॥
 ए त र्के सु ल नी व र्क य ध र्म वा नू क ल्य के ॥ ॥ वे न्द व व द्धि को ल अ व सू को र्ण दि ग य र्ग ॥ द
 न वि उ व र्क वा र्म द्वि ती र्य वा नू क ल्य के ॥ ॥ हू यू र्ण उ व नेखा व द्वा र्ने व वि को ल की वे न्द व
 अ समा लि ख्य तृ ती र्य वा नू क ल्य के ॥ ३ ॥

अभा

1880

I